

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 15 — धेनुकासुर-वध

5 October 2026



जब दुष्ट गधा-असुर धेनुक उन पर लात मारता है, तब बलराम उसे पिछले पैरों से पकड़कर हवा में घुमाते हैं और एक ऊँचे ताड़ वृक्ष की चोटी पर फेंक देते हैं, जिससे तालवन सबके लिए मुक्त हो जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह पंद्रहवाँ अध्याय प्रभु की लीलाओं में एक नई ऋतु खोलता है। ग्वाल-अवस्था में पहुँचकर कृष्ण और बलराम खिले हुए वृन्दावन में गौएँ चराते घूमते हैं, और कृष्ण की बाँसुरी तथा क्रीड़ा वन को सौन्दर्य से भर देती है। जब उनके साथी उन्हें पास के तालवन के विषय में बताते हैं — जो मधुर फलों से भरा है किन्तु दुष्ट गधा-असुर धेनुक द्वारा रक्षित है — तब दोनों भाई उन्हें प्रसन्न करने वहाँ जाते हैं, और बलराम धेनुक तथा उसके असुर-झुंड का वध कर वन को सबके लिए मुक्त कर देते हैं। एक अन्य दिन, जब गौएँ और बालक यमुना का जल पीकर उसके विषैले जल से निष्प्राण गिर पड़ते हैं, तब कृष्ण अपनी एक करुणामयी दृष्टि से उन सबको जिला देते हैं — चुपचाप अगले अध्याय की सर्प कालिय की महान् लीला की भूमिका रचते हुए।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 15 (पंचदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: धेनुकासुर-वध
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: वृन्दावन, तालवन ताड़-वन, और व्रज में यमुना का तट
- केंद्रीय विषय: ग्वाल रूप में कृष्ण और बलराम; वृन्दावन का सौन्दर्य; तालवन का प्रसंग; धेनुकासुर और उसके झुंड का वध; और यमुना के विषैले जल से गौओं तथा बालकों का पुनर्जीवन
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 1-52
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

चौदहवें अध्याय में विनम्र ब्रह्मा ने अपनी प्रसिद्ध स्तुतियाँ अर्पित कर प्रस्थान किया, और कृष्ण अपने प्रतीक्षारत साथियों के पास लौटे, जिनके लिए एक वर्ष क्षण भर के समान बीता। यह अध्याय कृष्ण के बचपन को आगे बढ़ाता है, जब वे और बलराम, अब ग्वाल-अवस्था में, गौएँ चराने ले जाते हैं और व्रज के वनों में अब भी छिपे असुरों से मिलते हैं।

वृन्दावन के किशोर ग्वाल

ग्वाल-अवस्था में पहुँचकर कृष्ण और बलराम गौओं के रक्षक रूप में सम्मानित हुए, और अपने साथियों सहित वृन्दावन में गौएँ चराते हुए उस पवित्र वन को अपने चरणों के स्पर्श से और भी सुन्दर बनाते रहे। बाँसुरी बजाते, गोपों द्वारा गीतों में गाए जाते, और बलराम के साथ कृष्ण उस पुष्पित वन में प्रवेश करते और उसके सौन्दर्य में रमते — उसके गुंजार करते भौरे और गाते पक्षी, किसी महात्मा के मन-सा स्वच्छ सरोवर, और कमल-सुगन्धित समीर।

फल और फूलों के भार से झुके, अपनी शाखाओं से उनके चरणों को छूते वृक्षों को देखकर कृष्ण मुस्कराए और अपने अग्रज से समस्त वृन्दावन के सौभाग्य की चर्चा की। वृक्ष, उन्होंने कहा, अपने वृक्ष-जन्म के अन्धकार को दूर करने के लिए अपने फल-फूल अर्पित करते झुक जाते हैं; भौरे श्रेष्ठ ऋषियों की भाँति उनकी महिमा गाते हुए उनके पीछे चलते हैं; मोर नाचते हैं और हरिणियाँ गोपियों की भाँति उन्हें प्रेम से निहारती हैं। और सबसे बढ़कर धन्य है यही भूमि, जिसकी घास, लताएँ, पर्वत और नदियाँ पवित्र चरणों से स्पर्शित हैं।

धन्येयमद्य धरणी तृणवीरुधस्त्वत्-
पादस्पृशो द्रुमलताः करजाभिमृष्टाः ।
नद्योऽद्रयः खगमृगाः सदयावलोकै-
र्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥ ८ ॥

*dhanyeyam adya dharaṇī tṛṇa-vīrudhas tvat- pāda-spṛśo druma-latāḥ karajābhimṛṣṭāḥ nadyo
'drayaḥ khaga-mṛgāḥ sadayāvalokair gopyo 'ntareṇa bhujayor api yat-spṛhā śrīḥ*

अर्थ: आज यह पृथ्वी धन्य है, जिसकी घास और पौधे आपके चरणों से स्पर्शित हैं, जिसके वृक्ष और लताएँ आपके नखों से छुई हैं, और जिसकी नदियाँ, पर्वत, पक्षी और पशु आपके करुणामय कटाक्षों से सम्मानित हैं — और धन्य हैं गोपियाँ, जिनके लिए आपकी भुजाओं का वह आलिंगन सुरक्षित है जिसकी लक्ष्मी भी लालसा करती हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 8)

वन में कृष्ण की क्रीड़ा

दिनों तक कृष्ण वृन्दावन में क्रीड़ा करते रहे, कभी गाते हुए जबकि मतवाले भौंरे उनके चारों ओर गुंजार करते, तोतों, कोयलों और हंसों की नकल करते, मोरों के साथ नाचते, और दूर की गौओं को मेघ-गम्भीर वाणी से नाम लेकर पुकारते। जब बलराम खेल से थक जाते, तब कृष्ण उन्हें किसी ग्वाल की गोद में सिर रखकर विश्राम कराते और स्वयं उनके चरण दबाते; और प्रेम से द्रवित ग्वालबाल उन्हें पंखा झलते, उनके चरण दबाते और मधुर गीत गाते। इस प्रकार वे प्रभु, जिनके चरण-कमलों की सेवा लक्ष्मी करती हैं, अपनी दिव्यता छिपाकर ग्रामीण बालकों के बीच एक साधारण ग्रामीण बालक की भाँति खेलते रहे।

एवं निगूढात्मगतिः स्वमायया
गोपात्मजत्वं चरितैर्विडम्बयन् ।
रेमे रमालालितपादपल्लवो
ग्राम्यैः समं ग्राम्यवदीशचेष्टितः ॥ १९ ॥

*evam nigūdhātma-gatiḥ sva-māyayā gopātmajatvaṁ caritair viḍambayan reme ramā-lālita-
pāda-pallavo grāmyaiḥ samam grāmya-vad īśa-ceṣṭitaḥ*

अर्थ: इस प्रकार अपनी शक्ति से अपने वास्तविक स्वरूप को छिपाकर और अपने कर्मों से गोप-पुत्र की भूमिका का अनुकरण करते हुए, वे प्रभु — जिनके कोमल चरण लक्ष्मी द्वारा सेवित हैं — ग्रामीण बालकों के बीच ग्रामीण बालक की भाँति क्रीड़ा करते रहे, यद्यपि उनका हर कर्म परम प्रभु का ही था। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 19)

तालवन का प्रसंग

एक दिन राम और कृष्ण के मित्र ग्वाल श्रीदामा ने सुबल, स्तोककृष्ण और अन्य बालकों सहित उनसे स्नेहपूर्वक कहा। पास ही, उन्होंने कहा, ताड़ वृक्षों से घना एक बड़ा वन है, जहाँ मधुर फल गिरे और पकते हुए प्रचुरता में पड़े हैं — किन्तु उसे दुष्ट गधा-असुर धेनुक ने रोक रखा है, जो अपनी ही जाति के अनेक बलवान् बन्धुओं से घिरा, मनुष्यों को खा जाता है, जिससे न मनुष्य, न पशु, न पक्षी तक वहाँ जाते हैं। न चखे फलों की सुगन्ध से खिंचकर बालकों ने कृष्ण और बलराम से उसे जीत लाने की प्रार्थना की।



श्रीदामा और अन्य बालक कृष्ण और बलराम को पास के तालवन के विषय में बताते हैं, जो पके फलों से भरा है किन्तु भयंकर गधा-असुर धेनुक द्वारा रक्षित है, और उसे चखने की लालसा करते हैं (श्लोक 20-27)।

अपने मित्रों के स्नेहमय वचन सुनकर, और उन्हें प्रसन्न करने की इच्छा से, दोनों भाई हँसे और ग्वालबालों से घिरे तालवन की ओर चल पड़े।

धेनुकासुर-वध

वन में प्रवेश कर बलराम ने अपनी बलिष्ठ भुजाओं से, किसी महान् हाथी की भाँति, ताड़ वृक्षों को हिलाया और पके फल नीचे गिरा दिए। गिरते फलों का शब्द सुनकर गधा-असुर धेनुक भूमि और वृक्षों को कँपाता हुआ दौड़ा आया, और बलराम की छाती पर अपने पिछले पैरों की तीव्र लात मारी; फिर जोर से रेंकता हुआ इधर-उधर दौड़ने लगा। किन्तु जब उसने पुनः झपटकर बलराम पर अपने पैर फेंके, तब प्रभु ने उसे खुरों से पकड़ा, एक ही हाथ से घुमाया, और निष्प्राण उसे एक ऊँचे ताड़ वृक्ष की चोटी पर फेंक दिया।

स तं गृहीत्वा प्रपदोभ्रामयित्वैकपाणिना ।

चिक्षेप तृणराजाग्रे भ्रामणत्यक्तजीवितम् ॥ ३२ ॥

sa taṁ gr̥hītvā prapador bhrāmayitvaika-pāṇinā cikṣepa tṛṇa-rājāgre bhrāmaṇa-tyakta-jīvitam

अर्थ: बलराम ने उस असुर को खुरों से पकड़कर एक ही हाथ से एक बार घुमाया और उसे एक ऊँचे ताड़ वृक्ष की चोटी पर फेंक दिया, जिसके घुमाव से उसके प्राण निकल गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 32)



जब धेनुक के असुर-बन्धु क्रोध में झपटते हैं, तब कृष्ण और बलराम उन्हें पकड़कर ताड़ वृक्षों पर फेंक देते हैं, यहाँ तक कि भूमि फलों से चमक उठती है और देवगण पुष्प बरसाते हैं (श्लोक 36-40)।

धेनुक के अन्य असुर-बन्धु उसका बदला लेने क्रोध में झपटते; किन्तु कृष्ण और बलराम ने हर एक को पिछले पैरों से पकड़कर ताड़ वृक्षों पर फेंक दिया, यहाँ तक कि भूमि फलों और असुर-शरीरों से बिछ गई और मेघों से भरे आकाश-सी चमक उठी। देवताओं ने पुष्प बरसाए, बाजे बजाए और स्तुति की। शुकदेवजी स्मरण कराते हैं कि अनन्त प्रभु में, जिन पर यह समस्त जगत् धागों पर बुने वस्त्र की भाँति ओतप्रोत है, ऐसा कार्य कोई आश्चर्य नहीं।

नैतच्चित्रं भगवति ह्यनन्ते जगदीश्वरे ।

ओतप्रोतमिदं यस्मिस्तन्तुष्वङ्ग यथा पटः ॥ ३५ ॥

naitac citraṁ bhagavati hy anante jagad-īśvare ota-protam idaṁ yasmimś tantuṣv aṅga yathā paṭaḥ

अर्थ: अनन्त प्रभु में, जगत् के स्वामी में, यह कोई आश्चर्य नहीं, हे प्रिय राजन्, जिन पर यह समस्त जगत् वैसे ही ओतप्रोत है जैसे धागों पर वस्त्र। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 35)

उस दिन से, असुर से मुक्त होकर, लोग निर्भय होकर ताड़ के फल खाने लगे और पशु उस पहले वर्जित वन की घास चरने लगे।

ब्रज में वापसी

तब कमलनयन कृष्ण, जिनकी महिमा सुनने और गाने योग्य पवित्र है, बलराम सहित पीछे चलते गोपों द्वारा गाए जाते हुए ब्रज लौटे। चरती गौओं की धूल अभी भी उनके घुँघराले केशों में लिपटी थी, शीश पर मोरपंख सुशोभित था, और चलते-चलते वन-पुष्प बिखरे पड़े थे — एक हाथ सहचर के कंधे पर टिका, दूसरे हाथ से अधरों तक बाँसुरी उठाए। दिन भर प्रतीक्षा करती गोपियाँ उन्हें देखने की लालसा से एक साथ निकल आईं।

तं गोरजश्छुरितकुन्तलबद्धबर्ह-
वन्यप्रसूनरुचिरेक्षणचारुहासम् ।
वेणुम्क्वणन्तमनुगैरुपगीतकीर्तिं
गोप्यो दिदृक्षितदृशोऽभ्यगमन् समेताः ॥ ४२ ॥

*taṁ gorajāś-churita-kuntala-baddha-barha- vanya-prasūna-rucirekṣaṇa-cāru-hāsam veṇum
kvaṇantam anugair upagīta-kīrtiṁ gopyo didṛkṣita-dṛśo 'bhyagaman sametāḥ*

अर्थ: गौओं की धूल से सने केश, उनमें बँधा मोरपंख, वन-पुष्पों से अलंकृत, सुन्दर कटाक्ष और मनोहर मुस्कान लिए, बाँसुरी बजाते हुए जबकि साथी उनकी महिमा गाते थे — उनकी ओर गोपियाँ, उन्हें देखने को उत्सुक नेत्रों से, एक साथ निकल आईं। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 42)



जब गौएँ और बालक सर्प कालिय द्वारा विषाक्त यमुना का जल पीकर निष्प्राण गिर पड़ते हैं, तब कृष्ण अपनी अमृत-वर्षिणी दृष्टि से उन सबको जिला देते हैं (श्लोक 47-52)।

अपने नेत्र-रूपी भौरों से मुकुन्द के मुख का मधु पीकर ब्रज की स्त्रियों ने दिन भर के वियोग की पीड़ा त्याग दी। उनका प्रेममय स्वागत पाकर कृष्ण गोशाला में प्रविष्ट हुए; और अपने पुत्रों के प्रति स्नेहमयी यशोदा तथा रोहिणी ने उन्हें स्नान कराया, सुन्दर मालाओं और सुगन्धियों से सजाया, उनका प्रिय भोजन कराया, और सुखपूर्वक सुला दिया।

यमुना का विषैला जल

एक अन्य दिन कृष्ण ग्वालबालों के साथ, किन्तु बलराम के बिना, यमुना गए। ग्रीष्म की गर्मी से पीड़ित और प्यास से व्याकुल गौओं और बालकों ने नदी का जल पिया — वह जल जो एक महान् सर्प के विष से विषाक्त हो चुका था। छूते ही, चेतना अभिभूत होकर, वे सब तट पर निष्प्राण गिर पड़े। अपने प्रियजनों को इस दशा में देखकर कृष्ण, समस्त योगेश्वरों के ईश्वर, ने अमृत बरसाती दृष्टि से उन्हें जिला दिया। स्मृति लौटने पर जल के किनारे से उठकर वे आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे, यह समझते हुए कि केवल गोविन्द की करुणामयी दृष्टि से ही वे विष पीकर, मानो मृत्यु से, पुनः उठ खड़े हुए हैं।

अन्वमंसत तद् राजन् गोविन्दानुग्राहेक्षितम् ।

पीत्वा विषं परेतस्य पुनरुत्थानमात्मनः ॥ ५२ ॥

anvamaṁsata tad rājan govindānugrahekṣitam pītvā viṣaṁ paretasya punar utthānam ātmanaḥ

अर्थ: उन्होंने समझा, हे राजन्, कि गोविन्द की करुणामयी दृष्टि से ही वे, विष पीकर मृत हो जाने पर, पुनः जीवित उठ खड़े हुए हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 15, श्लोक 52)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रभु की उपस्थिति समस्त सृष्टि को धन्य कर देती है। कृष्ण वृन्दावन की भूमि, वृक्षों, नदियों और प्राणियों को पवित्र चरणों के स्पर्श से धन्य कहते हैं (श्लोक 8)। जहाँ भी प्रभु पूजित हैं, वहाँ समस्त सृष्टि पवित्र हो जाती है।
2. भगवान् अपनी महिमा छिपाकर हमारा जीवन बाँटते हैं। लक्ष्मी द्वारा सेवित कृष्ण एक साधारण ग्रामीण बालक की भाँति खेलते हैं (श्लोक 19)। वे अपनी महिमा छिपाते हैं ताकि हम भय से नहीं, प्रेम से उनके निकट आ सकें।
3. प्रभु अपने भक्तों के आनन्द के लिए कर्म करते हैं। वे केवल अपने मित्रों को प्रसन्न करने के लिए, जो तालवन के फल की लालसा करते थे, उस भयंकर वन में जाते हैं (श्लोक 20-27)। उनके कर्म उन पर निर्भर रहने वालों के प्रेम से बहते हैं।
4. समस्त शक्ति उनमें सहज ही निहित है। धेनुक का वध कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि समस्त जगत् प्रभु पर धागों पर वस्त्र की भाँति ओतप्रोत है (श्लोक 35)। जो हमें विस्मित करता है, वह उनके लिए सहज है।
5. उनकी करुणामयी दृष्टि जीवन लौटा देती है। जब बालक और गौएँ विषैले जल से गिर पड़ते हैं, तब कृष्ण की एक दृष्टि उन्हें जिला देती है (श्लोक 52)। प्रभु की कृपा मृत्यु से भी जीवन ला सकती है।

एक भक्तिमय चिन्तन

कृष्ण जिस दृष्टि से वृन्दावन को देखते हैं, उसमें एक शान्त सौन्दर्य है। उनके लिए झुके वृक्ष अपने फल अर्पित करते भक्त हैं, भौरे उनकी स्तुति गाते ऋषि हैं, और स्वयं घास और धूल धन्य हैं। वे साधारण संसार को देखते हैं और उसे भक्ति से चमकता हुआ पाते हैं — और शायद यही वह दृष्टि है जिसमें भागीदार होने के लिए यह अध्याय हमें बुलाता है। वही प्रभु जो एक असुर को ताड़ वृक्ष पर घुमा देते हैं और एक दृष्टि से मृतकों

को जिला देते हैं, वही वन में चुपचाप घूमते हुए फूलों की स्तुति करते और गौओं को नाम लेकर पुकारते हैं। उनकी शक्ति असीम है, फिर भी वे उसे केवल अपने प्रियजनों की रक्षा और प्रसन्नता के लिए चलाते हैं, अपनी महिमा को इतना पूर्णतः छिपाते हैं कि उनके मित्र उनसे ताड़ के फल माँगने और उनकी गोद में सिर रखने का साहस करते हैं। जब हमारा अपना जीवन विषैला-सा लगे, जब शक्ति चुक जाए और हम जल के किनारे गिर पड़ें, तब यह अध्याय हमें आश्चस्त करता है कि उनकी करुणा की एक दृष्टि हमें फिर उठाने के लिए पर्याप्त है। हमें वह दृष्टि अर्जित नहीं करनी; हमें केवल, ब्रज के बालकों की भाँति, उनका होना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज संसार को वैसे देखने का प्रयास करें जैसे कृष्ण वृन्दावन को देखते हैं — भक्ति की सम्भावना से चमकते स्थान के रूप में। प्रकृति के किसी छोटे भाग को — एक वृक्ष, एक पक्षी, अपने चरणों के नीचे की धरती को — देखें और मौन कृतज्ञता अर्पित करें कि वह प्रभु का है और उनकी कृपा से स्पर्शित हो सकता है। जब आप दिन की चिन्ताओं से क्षीण या विषाक्त अनुभव करें, तब एक दृष्टि से जिलाए गए बालकों को स्मरण करें, और इस विश्वास में विश्राम पाएँ कि उनकी करुणा आपको फिर उठा सकती है। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह पंद्रहवाँ अध्याय कृष्ण और बलराम को उनके ग्वाल-वर्षों में ले आता है, जब वे उस वृन्दावन में घूमते हैं जिसे कृष्ण भक्ति से देदीप्यमान देखते हैं। अपने मित्रों को प्रसन्न करने के लिए दोनों भाई वर्जित तालवन में प्रवेश करते हैं, जहाँ बलराम गधा-असुर धेनुक और उसके झुंड का वध कर वन को सबके लिए मुक्त करते हैं; और जब गौएँ तथा बालक यमुना के विषैले जल से निष्प्राण गिर पड़ते हैं, तब कृष्ण उन्हें एक करुणामयी दृष्टि से जिला देते हैं। वीर कर्मों और कोमल क्रीड़ा दोनों में प्रभु अपनी महिमा छिपाते हैं और केवल अपनों के प्रेम में कर्म करते हैं, जब तक समस्त ब्रज उनकी ओर और गहराई से खिंच न जाए। हम भी संसार को उनकी दृष्टि से देखना सीखें, उन पर वैसे ही निर्भर रहें जैसे उनके मित्र रहे, और यह विश्वास करें कि उनकी कृपा हमें किसी भी विष से, जो हमारे जीवन को धमकाए, फिर उठा सकती है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), पंचदश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-15-killing-of-dhenukasura-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

